संस्कृत गीतम्

वन्दे भारतम् वन्दे मातरम् सर्वे भवन्तु सुखिनः।
सर्वे सन्तु निरामयाः।। वन्दे भारतं वन्दे मातरम्
जय–जय भारतं जय–जय मातरम्।।

नरसेवा नारायणसेवा भावं हृदये स्थापयति
सत्यमेव जयते सदैव पश्यन्तु सर्वे भद्राणि।।
वन्दे भारतं वन्दे मातरम्
जय–जय भारतं जय–जय मातरम्।।1।।

राष्ट्रसेवा प्रथमो धर्मः इतस्य उद्घोषका
समरसतायाः भावना सर्वे सन्तु निरामयाः।।
वन्दे भारतं वन्दे मातरम्
जय–जय भारतं जय–जय मातरम्।।2।।

विद्या भारती शोभना शिक्षा सेवया
राष्ट्रसेवा संकल्पोस्माकं जनहिताय।।
वन्दे भारतं वन्दे मातरम्
जय–जय भारतं जय–जय मातरम्।।3।।

माध्यमिक कक्षा हेतु

राष्ट्र सेवा हित समर्पित हम करें सर्वस्व अर्पण।
साधना पथ पर चलें नित करें सार्थक सफल जीवन।।ध्रुपद

देश जागृत हो रहा है विश्व भी स्वीकारता।
युवा शक्ति क्रांति लाई सब कोई है जानता।।
विविध क्षेत्रों में प्रगति है हो रहा नवजागरण।
साधना पथ पर चलें नित करें सार्थक सफल जीवन।।1।।

संगठित हम हो रहे हैं एक नया विश्वास है।
लक्ष्य होंगे पूर्ण सब के सभी में उल्लास है।।
इक नया भारत बनेगा स्वस्थ सुस्थिर शुभ चिरंतन।
साधना पथ पर चलें नित करें सार्थक सफल जीवन।।2।।

गीत वंदे मातरम् हम सभी मिलकर गा रहे।
डेढ़ सौ वर्षो की यात्रा सप्त सुर में ढल रहे।।
पंच परिवर्तन से होगा भव्य भारत का गठन।
साधना पथ पर चलें नित करें सार्थक सफल जीवन।।3।।

प्राथमिक कक्षा हेतु

भारत की पावन माटी का तिलक लगाते हैं

भारत की पावन माटी का तिलक लगाते हैं
हम शिशु मंदिर के बच्चे इसे शीश नवाते हैं।।

गंगा से पावन बनकर हम सबके कष्ट मिटाएं।
ऐसी शक्ति दे दो भगवन हम सबके बन जाएं, हम सबके बन जाएं।
हाथ पकड़ ले उनका जो पीछे रह जाते हैं.....।
हम शिशु मंदिर के बच्चे इसे शीश नवाते हैं।।1।।

सूरज जैसे तपते हैं और चंद्र सा शीतल रहते।
जैसा भाव मिले हमको हम वैसे ही बन जाते, हम वैसे ही बन जाते।।
शत्रु आंख दिखाएं तो हम, सबक सिखाते हैं।
हम शिशु मंदिर के बच्चे इसे शीश नवाते हैं।।2।।

ध्रुव प्रहलाद भरत सा बनना जिसने हमें सिखाया।
सत्य बोलना झूठ से लड़ना जिसने हमें बताया, जिसने हमें बताया।।
ऐसे गुरुजन को हम पुनि–पुनि शीश झुकाते हैं....।
हम शिशु मंदिर के बच्चे इसे शीश नवाते हैं।।3।।